कृषि विज्ञान केन्द्र, राजगढ़ (ब्यावरा) म.प्र.

राजमाता विजया राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

सफलता की कहानी

जैविक हल्दी उत्पादन एवं क्षेत्र विस्तार

नाम – श्रीमति पवित्रा अग्रवाल
पति का नाम – श्री रामनारायण अग्रवाल
निवासी ग्राम – चाटूखेड़ा
मोबाईल नं. – 8719972614

पूर्व स्थिति –

पहले मैं गेहूं, चना, सोयाबीन की खेती करती थी तथा इन्ही फसलों पर निर्भर रहती थी मेरे पास इन फसलों के अलावा कोई दूसरा स्त्रोत नही था।

वर्तमान स्थिति –

मुझे कृषि विज्ञान केन्द्र राजगढ़ द्वारा हल्दी उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा केन्द्र से हल्दी किस्म–रोमा राजविजय बीज 2 क्विंटल 8000 रूपये/क्विंटल की दर से 16,000=00 रूपये का बीज क्रय किया गया। साथ ही पारम्परिक फसलों के अलावा अदरक, जैविक खाद, वर्मीकम्पोस्ट एवं आय व्यय अन्य फसलें, अमरूद, सहजन, सब्जियॉ आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की।

2.0 क्विं. हल्दी 0.05 हेक्टेयर में जैविक बीजोपचार ट्राइकोडर्मा प्रकंदो (5ग्राम/कि. ग्रा.) का एवं 2.0 क्विं. वर्मीकम्पोस्ट का भूमि में डाला गया तथा 60X30 सेमी. के अन्तराल से बेड बनाकर बुआई की गई। तत्पश्चात् निंदाई/गुडाई, जीवामृत के दो छिड़काव, सिंचाई एवं जैविक कीट/रोग प्रबंधन कर 8 माह बाद खुदाई कर 25 क्विंटल हल्दी का उत्पादन प्राप्त हुआ।

उसके बाद 15 क्विंटल हल्दी 8000/रूपये प्रति क्विंटल की दर से बीज के रूप में जिले के कृषको को दिया जिसकी राशि 1,20,000 रूपये प्राप्त हुई तथा 5 क्विंटल हल्दी का पाउडर बनाकर अपनी स्वयं की दुकान पर बेच रहे है जिसमें 1.25 क्विंटल हल्दी पाउडर 250 रूपये/कि.ग्रा. की दर से 31,250 रूपये की राशि प्राप्त की गई तथा अगले वर्ष बुआई हेतु हल्दी का बीज भी रख लिया। 3 वर्षो से नियमित रूप से हल्दी की फसल का उत्पादन के साथ वर्मीकम्पोस्ट, जीवामृत आदि जैविक खाद स्वयं बनाकर फसल में उपयोग भी कर रही हूँ तथा मेरे द्वारा जिले के 60 कृषकों को हल्दी का बीज वितरित किया गया। इस प्रकार से प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में 1,00,000 रूपये व्यय कर 3,00,000 रूपये तक लाभ प्राप्त किया गया।

आयोजक : जिला प्रशा